Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
July to September 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLVII, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

भगवतधाम् शिवरीनारायण

डॉ. रामरतन साहू* वर्षा सूर्यवंशी **

*** सह-प्राध्यापक (इतिहास) सामाजिक विज्ञान विभाग, डॉ. सी.व्ही. रमन विश्वविद्यालय, करगीरोड, कोटा, बिलासपुर (छ.ग.) भारत**
**** शोधार्थी (इतिहास) डॉ. सी.व्ही. रमन विश्वविद्यालय, करगीरोड, कोटा, बिलासपुर (छ.ग.) भारत**

शोध सारांश – छत्तीसगढ़ के इतिहास में शिवरीनारायण एक ऐसा परिचय है जो विलुप्त होती जा रही हमारी सांस्कृतिक पारम्परिक, धार्मिक, सामाजिक, आध्यात्मिक चेतना को पुनर्जीवित करता है। प्रमाण हैं कि यह प्रागैतिहासिक सभ्यता के अवशेष अंचल और आसपास के महानदी तट के क्षेत्रों से प्राप्त हुए हैं। यहां प्रागैतिहासिक शैलचित्रों की उपस्थिति इसका ठोस प्रमाण है। महानदी के तटवर्ती ग्राम्यांचलों के भित्ति चित्रांकन की लोक परम्परा भी इतिहास के रहस्यों को उजागर करते हैं। यहॉ बिरतिया कहे जाने वाले निषाद–केंवट, धीवर, मछुवारे और शबर जाति के भाट भी बहुतायत में रहते हैं जो यहॉ की लोक–कलाकृतियों के ज्ञाता है। वे स्वंय को शबरी का वंशज मानते हैं।

शब्द कुंजी – प्रागैतिहासिक, संस्कारधानी, चित्रोत्पल, शिवरीनारायणग्राम।

प्रस्तावना – शिवरीनारायण को छत्तीसगढ़ की संस्कारधानी के नाम से प्रसिद्धि प्राप्त है। ये सांस्कृतिक तीर्थ चित्रोत्पला गंगा के तट पर क्रमश: महानदी, शिवनाथ एवं जोंक नदीं के त्रिवेणी संगम पर स्थित है। परिचयात्मक स्वरूप में शिवरीनारायण का सुन्दर वर्णन करते हुए पंडित मालिकराम भोगहा श्री शिवरीनारायण माहात्म्य बताते हुए कहते है कि –

आठों गण सुर मुनि सदा आश्रय करत सधीर।
जानि नारायण क्षेत्र शुभ चित्रोत्पल नदि तीर।।
देश कलिंगहि आइके धर्म रूप थिर पाई।
दरसन परसन वास अरू सुमिरन ते दुख जाई।।

अर्थात आठों गण, देवता एवं मुनिगण धीरता पूर्वक नारायण क्षेत्र के चित्रोत्पला नदी के तट पर लगातार वास करते हैं। यहां जो स्थिरता पूर्वक निवास तथा दर्शन आदि करते हैं उन के दु:ख विनष्ट होते हैं।

पंडित हीराराम त्रिपाठी जी काव्य को पुन: भक्ति की पवित्र मन्दाकिनी में स्नान कराते हुए भक्ति रस धारा की ऐतिहासिकता में सराबोर करते हुए कहते हैं कि –

चित्रउतपला के निकट श्रीनारायण धाम।
बसत सन्त सज्जन सदा शिवरीनारायणग्राम ।।

सवैया :–

होत सदा हरिनाम उच्चारण रामायण नित गान करैं।
अति निर्मल गंगतरंग लखै उर आनंद के अनुराग भरैं।
शबरी वरदायक नाथ विलोकत, जन्म अपार के पाप हरैं।
जहां जीव चारू बखान बसैं सहजे भवसिंधु अपार तरैं।।

इन पंक्तियों में मिश्र जी ने इतिहास को जीवन के तीन कालों से संबद्ध किया है, यह भी तो निरन्तर प्रवाहित होकर गतिशील है, परिवर्तनशील है। यह प्रवाह टुकड़े–टुकडे नहीं होता और अनन्त और असीम से एकत्व का बोध कराते हुए दृढ़ संकल्पता के साथ प्रवाहित होता हुआ आगे बढ़ता है। चिन्तन मिश्रित अविराम गति से अर्थात विश्रांति न कि विराम के साथ प्रवाहमय है। इसमें मोड़ प्रति मोड़, उतार–चढ़ाव, घेराव–टकराव आते –जाते रहते हैं जो आवश्यक अंग हैं इस पथ के जो सीधा नही इसलिए बीते मोड़, उतार–चढ़ाव से आगे का मार्ग तय होता हैं, निश्चित होता हैं, जिसका शक्ति व सामर्थ्य अर्जित करने में ये तत्व सहायक होते हैं।

शिवरीनारायण ऐतिहासिक, धार्मिक, सांस्कृतिक व आध्यात्मिक तीर्थ है।[1] प्राकृतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण इस विष्णुकांक्षी तीर्थ का संबंध शबरी और नारायण से होने के कारण इसे शबरी नारायण भी कहा जाता है। शिवरीनारायण शैव, वैष्णव धर्मों का प्रमुख केन्द्र रहा है। यह स्थान भगवान जगन्नाथ का मूल स्थान होने के कारण यहां रथयात्रा का पर्व धूमधाम से मनाया जाता है। ऐसी मान्यता है कि भगवान श्री जगन्नाथ की विग्रह मूर्तियों को यहीं से जगन्नाथपुरी ले जाया गया था। यहां प्राचीन समय से प्रचलित रथयात्रा उत्सव में अन्य राज्यों के साधु–संत और श्रद्धालु सम्मिलित होते हैं। माघी पूर्णिमा को यहां छत्तीसगढ़ का सबसे भव्य पंद्रह दिवसीय मेला भरता है। महाशिवरात्रि के दिन को मेले का समापन होता है।[2] माघी पूर्णिमा के दिन यहां साधु– संत–महंत शाही स्नान करते हैं। भारतवर्ष प्राण संवाहिका नदियों का देश रहा है, जो कि सांस्कृतिक, सामाजिक व आर्थिक विकास में प्राचीनकाल से समर्पण रहा है। सिंधु तथा गंगा नदी की घाटियों में ही विश्व की सर्वाधिक प्राचीन सभ्यताओं–सिन्धु घाटी तथा आर्य सभ्यता का आर्विभाव हुआ। इसी परिप्रेक्ष्य में महानदी और छत्तीसगढ़ का अभिन्न सम्बन्ध है। आज भी देश और राज्य की सर्वाधिक जनसंख्या एवम् कृषि का संकेन्द्रण नदी घाटी क्षेत्रों में पाया जाता है। प्राचीन काल में व्यापारिक एवम् यातायात की सुविधा के कारण देश के अधिकांश नगर नदियों के तटों पर ही विकसित हुए थे[3] तथा आज भी देश के लगभग सभी धार्मिक स्थल किसी न किसी नदी से सम्बद्ध रहे हैं।

छत्तीसगढ़ का गुप्तधाम शिवरीनारायण रामावतार चरित्र और याज्ञवल्क्य संहिता में वर्णित है। यह नगर सतयुग में बैकुंठपुर, त्रेतायुग में रामपुर, द्वापरयुग में विष्णुपुरी और नारायणपुर के नाम से अवस्थित था। इतिहास में वर्णित है कि कोरिया जिले के भरतपुर पहुंचकर मवई नदी को पार कर श्रीराम जी ने दण्डकारण्य क्षेत्र में प्रवेश किया था। वे मांड नदी मार्ग

से चंद्रपुर और महानदी मार्ग से शिवरीनारायण पहुंचे थे। यहाँ मतंग ऋषि के आश्रम पर उन्होनें समय व्यतीत किया था। स्कंद पुराण में भी इस क्षेत्र का उल्लेख मिलता है। यह महानदी, जोंक और शिवरीनारायण नदियों के संगम स्थल और मैकल पर्वत श्रृंखला की तलहटी पर बसा अप्रितम, अद्भुत, सात्विक सौंदर्य से परिपूर्ण क्षेत्र है। जिसे 'नारायण क्षेत्र' और 'पुरूषोत्तम क्षेत्र' भी कहा जाता है।

चित्रोत्पला गंगा के तट पर सुशोभित है पवित्र, पुण्यप्रद, मोक्षदायी श्री नारायण धाम जिसे स्कंद पुराण में 'श्री पुरूषोत्तम क्षेत्र' कहा गया है।[4] वर्तमान में भी यहां चतुर्भुजी श्रीहरि विष्णु के विभिन्न अवतार स्वरूप, उहारणार्थ शबरीनारायण, केशवनारायण, लक्ष्मीनारायण आदि के दर्शनीय, दिव्य और भव्य श्रीविग्रहों के दर्शन प्राप्त होते हैं।

इस अद्भुत आस्था संगम पर स्थित हैं भगवान श्री शबरीनारायण, उनके चरण प्रक्षालन करता अक्षय कुण्ड रोहिणी, श्री चंद्रचूड़ महादेव, श्रीराम जानकी देवालय, दिव्य ऊर्जा संपन्न मठ, मठ परिसर और वहाँ स्थित पारंपरिक महंतो की समाधियाँ, भगवान श्रीजगन्नाथ-बलभद्र और सुभद्रा, श्रीराम-लक्ष्मण-जानकी मंदिर, शबरी के मधुर फल खाते श्रीराम और अनुज भ्राता श्री लक्ष्मण जी का मंदिर, श्रीकृष्ण वट वृक्ष, गादी चौरा, विभिन्न महत्वपूर्ण व ऐतिहासिक घाट, माखन साव घाट स्थित देवालय महेश्वरनाथ और शीतला देवी मंदिर, धन-धान्य, सुख-समृद्धि प्रदाता मां अन्नपूर्णा एवम् विभिन्न अनेक अन्यान्य देवालय तथा दैवीय श्रीविग्रह, जोगीडीपा अर्थात् योगियों के डेरे के श्री बजरंगबली हनुमान जी का मंदिर, शिवरीनारायण से दो किलोमीटर के दायरे पर स्थित खरौद का ऐतिहासिक, प्रमाणिक श्री लक्ष्मणेश्वर महादेव का चमत्कारी मंदिर, इंदलदेव मंदिर, सौराइन दाई (शबरी) मंदिर, गिरि गोस्वामियों का शैव मठ इत्यादि, यहां से 11 किलोमीटर की सीमा पर स्थित केरा का सिद्ध शक्तिपीठ माता चण्डी दाई का मंदिर, 11 कि.मी. दूर स्थित मेंहदी में सिद्ध हनुमान मंदिर, 12 कि0मी0 की दूरी पर स्थित गुरू घासीदास के गृहग्राम गिरौदपुरी का आध्यात्मिक मन्दिर, यहॉ से 17 कि0मी0 के दायरे पर नवागढ़ का शैव पीठ श्री लिंगेश्वर महादेव का शिवालय, प्राकृतिक सुरम्यता पूर्ण नैसर्गिक परिवेश और वातावरण युक्त दर्शनीय आकर्षण का स्थल जोंक नदी और पहाड़ी का क्षेत्र। यहॉ से नारायणपुर और तुरतुरिया का बौद्ध विहार, जैन स्थली, मल्हार आदि भी जाया जा सकता है।[5] तुरतुरिया के बौद्ध विहार में प्रतिवर्ष पौष पूर्णिमा (छेरछेरा पर्व) के दिन एक दिवसीय मेला भरता है जो आकर्षक और भव्य होता है।

समस्या का वर्णन – शोधकर्ता द्वारा शिवरीनारायण अंचल पर लेखन कार्य के दौरान अनेक समस्या उत्पन्न हुये। जिसका जीवटता के साथ सामना करके समस्या का समाधान करते हुये अपने कार्य को पूर्ण किया। शिवरीनारायण अंचल के वैभवपूर्ण इतिहास, संस्कृति, मूर्तिकला, संग्रहालय, सरोवर, ताम्रपत्र लिपी, सिक्के, भग्नावशेष, मंदिरो, उत्खनन हुये कार्य पर अध्ययन, आदि पर लेखन कार्य पूर्ण कर अंचल की ऐतिहासिकता को प्रकाश में लाकर धरोहर के रूप में संग्रहित करना चुनौतीपूर्ण कार्य है।

शोध-पत्र का उद्देश्य:

1. अंचल के जन जीवन का विस्तार से जानकारी प्राप्त करना।
2. भौगोलिक परिस्थितियों का अध्ययन कर भविष्य के लिये जानकारी एकत्र करना।
3. दक्षिण कोसल के इस क्षेत्र के राजनैतिक तथा सांस्कृतिक इतिहास का अध्ययन करना।
4. अंचल में अवस्थित मंदिरों, प्रतिमाओं, अभिलेखों का वैज्ञानिकता की दृष्टि से अध्ययन करना।
5. अंचल में छिपे विशिष्ट कलाओं को उजागर करना।
6. विभिन्न शासकों द्वारा किए गए, जनकल्याणकारी कार्यों इत्यादि को उनके द्वारा अंकित कराए गए कलाओं के माध्यम से समाज को अवगत कराना।
7. क्षेत्रीय कलाओं को विश्वपटल पर लाकर छत्तीसगढ़ की प्राचीन सभ्यताओं की विशेषता से लोगों को परिचित कराना।

डेटा संग्रह में प्रयुक्त उपकरण – प्राथमिक स्रोत के अंतर्गत साक्षात्कार, अवलोकन, सर्वेक्षण विधि, पुस्तकें, समाचार पत्र-पत्रिकाएँ जर्नल इत्यादि से तथ्यों का संकलन किया गया है।

द्वितीयक तथ्यों का संकलन – आवश्यकतानुसार समाग्री का संकलन एवं अध्ययन।

तथ्यों का विश्लेषण – आवश्यकतानुसार समाग्री का संकलन एवं अध्ययन।

निष्कर्ष– छत्तीसगढ़ की पावन धरा, माँ शबरी की तपोभूमि शिवरीनारायण धर्म और आस्था का केन्द्र है, जहॉ भगवान नारायण स्वरुप श्रीराम जी का विग्रह के दर्शन करने दूर दूर से भक्तजन आते है। यहॉ मोक्षदायिनी चित्रोत्पला का पावन तट भक्तों को मुक्ति दिलाता है। इस प्रकार मॉ शबरी का यह नगर तथा मतंग मुनि का आश्रम ऐतिहासिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से विशेष महत्व रखता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. भोगहा, मालिकराम, शिवरीनारायण माहात्म्य, अरपा प्रकाशन, बिलासपुर, पृष्ठ 15, 1988
2. त्रिपाठी, हीराराम शबरीनारायण महात्म्य, बैभव प्रकाशन रायपुर, पृष्ठ 27, 1997
3. पटेल हरि राम, छत्तीसगढ़ विशिष्ट अध्ययन, एच आर पब्लिकेशन पृष्ठ 195, 2018
4. मिश्र रमेन्द्र नाथ, छत्तीसगढ़ का इतिहास दीक्षित ब्रदर्स रायपुर, पृष्ठ 79, 1990,
5. बेहार रामकुमार, छत्तीसगढ़ का इतिहास, छत्तीसगढ़ राज्य हिन्दी ग्रंथ अकादमी रायपुर, पृष्ठ 55, 2018

****